

## नई शिक्षा नीति में “कला–शिक्षा” की भूमिका

डॉ. शकुन्तला महावर

विभागाध्यक्ष (चित्रकला)

एस. एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सांगानेर

“शोध–सार”

आज का युग युवाओं का युग है। उन्हें सुनहरे कल के लिए ऐसी शिक्षा अथवा प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जो उन्हें रोजगार दे सकें अथवा उनका भविष्य संवार सकें। बच्चों व युवाओं में प्रतिभा होती है, जरूरत है तो उनकी इस प्रतिभा को पहचान कर उन्हें सही दिशा देने की। विष्व के किसी भी देश में दी जा रही कला शिक्षा की और दृष्टि डालें तो एक बात स्पष्ट है और वह “गुण की महत्ता” विज्ञान चाहें अपनी चरम स्थिति तक पहुँच कर रोबोट, कम्प्यूटर अथवा आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंसी के माध्यम से शिक्षार्जन करवा लें, किन्तु कलाओं के क्षेत्र में उसकी असमर्थता कायम रहेगी। वह कला का सहयोगी अवश्य हो सकता है, किन्तु विकल्प नहीं बन सकता है।

आज समय के साथ हमें यह महसूस हुआ कि 1986 की शिक्षा नीति में कुछ खामियां हैं इसके तहत बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा है किन्तु यह ज्ञान उसे भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बना पा रहा है। देश में कई दशकों के बाद शिक्षा के क्षेत्र में नई शिक्षा नीति 2020 का लागू होना एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। नई शिक्षा नीति में काफी बदलाव किया गया है। अभी तक जिन विषयों को केवल सहयोगी विषय के तौर पर जाना और पढ़ाया जाता है वह अब उन्हें शिक्षार्थी मुख्य विषय के रूप में चुन कर कला के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे या अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:–

1. मोनिक चौधरी :- वॉस्ट एण्ड विजन ए जनरल ऑफ विज्यूअल आर्ट, 2009–10
2. फ्रायबेल :- एजुकेशन ऑफ मैन, डी.एफ. लंदन सेंचुरी कम्पनी, लंदन
3. प्लेटो :- द रिपब्लिक : मॉर्डन लाईब्रेरी
4. नन्दलाल बोस :- शिल्पकला साहित्य भवन लि. इलाहाबाद, 1952
5. रवीन्द्रनाथ टैगोर :- शिक्षा कैसी हो हिन्दी
6. फ्रायबेल :- एजुकेशन ऑफ मैन, डी.एफ. लंदन सेंचुरी कम्पनी, लंदन
7. आनन्द कुमार स्वामी :- डांस ऑफ शिवा, एशिया पब्लिशिंग हाऊस, 1956
8. NEP Final English PDF 10.08.2020 को संदर्भित